P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-11* July- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय कृषि पर वैश्विक कोरोना महामारी (कोविड–19) के प्रभाव, अवसर एवं चुनौतियाँ

Impact, Opportunities and Challenges of the Global Corona Epidemic (COVID-19) on Indian Agriculture

Paper Submission: 15/07/2020, Date of Acceptance: 25/07/2020, Date of Publication: 27/07/2020

सर्फराज रामानंद सागर
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
टी0 एन0 बी0 महाविद्यालय
भागलपुर, तिलकामाँझी
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर,भारत

सारांश

कोरोना महामारी एक वैश्विक महामारी है जिसने जीवन के हर पहलुओं को प्रभावित किया हैं। खुदरा बाजार से लेकर कुटीर उद्योगों, लघु उद्योगो, वृहत उद्योगों, शॉपिंग मॉल सब पर बड़ा घातक प्रभाव पड़ा हैं। कोविड–19 का प्रभाव किसी एक क्षेत्र पर न होकर अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर हैं। यह भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक रूप से पूरी दुनिया को प्रभावित कर रहा है। कृषि विनिर्माण और सेवा क्षेत्र तीनों ही एक गहरी मंदी की तरफ बढ़ती जा रही है। वर्तमान ऑकड़ों के अनुसार कोविड–19 का प्रभाव ग्रामीण भारत पर कम पड़ा है। यह संकट गांवों तक फैला तो स्थिति अति भयावह हो सकती है। एक बड़ी आबादी के पुनः गांवों की ओर पलायन होने से कृषि क्षेत्र पर आजीविका के लिए काफी दबाव बढ़ रहा है। एक तरफ कृषि उत्पाद के बंपर होने की संभावना है। वहीं दूसरी तरफ कृषि बाजार के बंद होने से कृषि उत्पाद की बिक्री नहीं हो रही है। खासकर होटल व रेस्टोरेंट के बंद होने से सब्जियों की बिक्री नहीं होने से किसान शब्जियों को फेकने पर मजबूर हो रहे हैं। वहीं शादी–विवाह जैसे सामाजिक समारोहों के बंद होने से फूल एवं सब्जियों सहित अन्य सामानों की बिक्री नही हो पा रही है। जनवरी 2020 में एनएसओ की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2020 में कृषि की विकास दर लगभग तीन प्रतिशत रहेगी। लेकिन कोविड़–19 के कारण यह विकास दर काफी कम रह सकती हैं। वहीं प्राकृतिक मार, किसानों की ऋणग्रस्तता, कृषि उत्पादों की उचित कीमत के नहीं मिलने से किसानों की हालत ठीक नहीं है। ऐसी स्थिति में कोविड–19 का भारतीय कृषि पर बहुत घातक प्रभाव हो रहा है। कोविड–19 के जारी संकट के बीच कृषि क्षेत्र के लिए एक बड़े अवसर के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद कृषि थी, कृषि है और कृषि ही रहेगी। अतः देश के 6 लाख गांवों में कृषि आधारित उद्योगों को विकसित करने पर जोर दिया जा सकता है। ऐसा करने से एक ओर कृषि क्षेत्र का विकास होगा। वहीं अपने गांवों में रोजगार मिलने से पलायन को भी रोका जा सकेगा।

The corona epidemic is a global epidemic that has affected every aspect of life. From the retail market to cottage industries, small scale industries, large scale industries, shopping malls have all had a fatal impact. The impact of covid-19 is on all sectors of the economy, not on one area. It is affecting the whole world geographically, economically, socially. All three of the agricultural manufacturing and service sectors are moving towards a deep recession. According to current data, Covid-19 has had less impact on rural India. If this crisis spreads to the villages, the situation can be very frightening. Due to the migration of a large population to the villages, there is increasing pressure on the agricultural sector for livelihood. On one hand, there is a possibility of bump of agricultural produce. On the other hand, agricultural products are not being sold due to the closure of the agricultural market. Especially due to the closure of hotels and restaurants, vegetables are not being sold, farmers are forced to throw vegetables. At the same time, due to the closure of social ceremonies like marriage and other ceremony, there is no sale of other goods including flowers and vegetables. According to the NSO report in January 2020, the growth rate of agriculture will be around 3 percent in the year 2020. But due to Covid-19, this growth rate can be very low. At the same time, the condition of the farmers is not good due to the natural hit, indebtedness of the farmers, lack of proper price for agricultural produce. In such a situation Covid-19 is having a very deadly effect on Indian agriculture. In the midst of the ongoing crisis of Covid-19, this can be transformed into a major opportunity for the agricultural sector. The foundation of the Indian economy was agriculture, agriculture is and agriculture will remain. Therefore, emphasis can be laid on developing agro-based industries in 6 lakh villages of the country. By doing this, agriculture sector will develop on the one hand. At the same time, migration to your villages will also prevent migration.

मुख्य शब्द : कोविड–19, कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, पलायन, कृषि उद्योग ।
Covid-19, Agriculture, Rural Economy, Migration, Agricultural Industry.

प्रस्तावना

कोविड–19 एक वैश्विक महमारी है। इस महामारी ने विश्व के देशों को बुरी तरह से प्रभावित किया है। कोरोना वाइरस का पहला मामला नवंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में आया जो चीन से निकलकर विश्व के देशों में फैला। कोरोना वाइरस एक नया वाइरस है जो संक्रमित व्यक्तियों से स्वस्थ्य व्यक्तियों में बोलते या छींकते समय मुंह या नांक से निकली पानी की बूंदों से फैलती हैं। ये पानी की बूंदे सीधे व्यक्ति की शरीर में प्रवेश करने से या फिर संक्रमित व्यक्ति की मुँह या नांक से निकली पानी की बूंदों का सतह पर गिरने से सतह संक्रमित हो जानेवाली जगह पर स्वस्थ्य व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है। इसमें निमोनिया जैसे लक्षण दिखाई पड़ते हैं जैसे– बुखार, सर्दी, खांसी, शरीर में दर्द, सांस लेने में तकलीफ होना, दम का घुटना जैसे लक्षण दिखाई पड़ते हैं। कोविड़–19 से संक्रमित अधिकांश व्यक्ति बिना किसी विशेष उपचार के ही स्वस्थ्य हो रहें हैं लेकिन जो व्यक्ति पूर्व में ही किसी बीमारी से पीड़ित हैं उसकी मृत्यु तक हो जा रही है। यह महामारी चीन व विश्व स्वास्थ्य संगठन की गलती से फैला है क्योंकि समय रहते चीन व विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह भ्रम फैलाया कि यह महामारी नहीं है और यह मानव से मानव में नहीं फैलता है। यदि चीन व विश्व स्वास्थ्य संगठन ने समय पर सही सूचना कोरोना वाइरस के बारें में देता तो आज विश्व में कोरोना महामारी नहीं फैलती। यानी यह कोरोना महामारी चीन के वुहान शहर से निकलकर विश्व के सभी देशों में फैला है। वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका चीन पर जानबूझकर कोरोना महामारी फैलाने का आरोप लगा रहा है क्योंकि कोरोना अगर प्राकृतिक होता तो यह विश्व के सभी देशों में नहीं फैलता क्योंकि सभी देशों की जलवायु व प्राकृतिक दशाएं एक जैसी नहीं होती है। जहाँ एक ओर अंटार्कटिका के देशों में भीषण बर्फ तो अफ्रीका जैसे देशों में भीषण गर्मी पड़ती है तो वहाँ यह कोरोना वाइरस अपना दम तोड़ देता लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कुछ देश चीन पर जानबूझकर कोरोना वाइरस फैलाने का आरोप लगा रहें हैं क्योंकि ऐसा करने से जहाँ एक ओर विश्व के देश महामारी से बचने का उपाय खोज रहें हैं वहीं दूसरी तरफ चीन अन्य देशों में अपना व्यापार को बढ़ा रहा है। कोरोना चीन के लिए वरदान से कम नहीं है क्योंकि चीन कोरोना की आड़ में अपना व्यापार बढ़ा रहा है। चीन विश्व के देशों के शेयर सस्ते दामों में खरीद रहा है। विश्व के देश जहाँ चीन से बड़ी मात्रा में कोरोना कीट खरीद रहें हैं तो वहीं चाइना घटिया माल की सप्लाई करके भारी मुनाफा कमा रहा है। चीन विश्व के देशों की कंपनियों को औने–पौने दाम में खरीद रही है। चीन की पूर्व नियोजित मंशा से इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि जहाँ कोरोना वाइरस की शुरूआत चीन के वुहान शहर से हुई वह विश्व के देशों में तो तेजी से फैला लेकिन चीन के वुहान शहर के बाहर अन्य किसी शहर में नहीं फैला यानी यह पूर्व नियोजित था। यदि हम इसे चीनी वाइरस कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इस कोरोना वाइरस का अभी तक कोई इलाज नहीं है। विश्व के वैज्ञानिक इसका उपचार व टीका खोजने में लगे हुए हैं। ऐसी स्थिति में कोरोना वाइरस से बचने का एकमात्र तरीका सावधानी एवं बचाव ही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं भारत सरकार ने इससे बचने के लिए समय–समय पर गाईडलाइन जारी किया जाता रहा है जिसे पालन करना आवश्यक हैं। वर्तमान समय में जारी दिशा निर्देशों के अनुसार लागों को खुद व अन्य व्यक्तियों से कम से कम 6 फीट की दुरी रखनी चाहिए। लोगों को अपने मुँह वा नांक को किसी अच्छे मास्क से ढ़ँक कर रखनी चाहिए। लोगों को अपना हाथ नियमित रूप से साबुन या अल्कोहल आधारित किसी तरल पदार्थ से साफ करते रहना चाहिए। अनावश्यक घर से बाहर न निकलें सावधानी ही बचाव है। अगर कोई व्यक्ति किसी अन्य शहर से या किसी अन्य प्रदेशों से आया हुआ हो तो उसे 14 दिनों तक होम क्वारंटाईन में या फिर सरकारी दिशानिर्देशों के अनुसार सरकारी क्वारंटाइन में रहना चाहिए। ताजा शोध के अनुसार कोविड–19 से बचाव के लिए 6 फीट की दूरी काफी नहीं है क्योंकि कोरोना वाइरस ठंड़े व नमी वाली सतहों या मौसम में यह 20 फीट की दूरी तय कर सकती है। अतः लोगों को समय–समय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन व भारत सरकार द्वारा जारी नवीनतम दिशा निर्देशों से अवगत होना जरूरी हैं। सावधानी ही वचाव है। सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। कोरोना वाइरस का प्रभाव अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर पड़ा है चाहे वह प्राथमिक क्षेत्र हो या द्वितीयक या तृतीयक सारे क्षेत्रों में कोरोना वाइरस का तबाही नजर आती है। ग्रामीण बाजार से लेकर शहरों के बाजारों तक मंदी हैं। लघु उद्योंगों से लाकर वृहत उद्योंगों तक, चाहें शिक्षा हो या चिकित्सा या फिर वैश्विक बाजार सभी जगह गहरी मंदी की साया है। लोगों का जीना मुहाल हो गया है। यह आलेख भारतीय कृषि पर कोविड–19 के प्रभाव की व्याख्या करता है कि किस प्रकार भारतीय कृषि कोविड–19 का शिकार हुआ हैं। साथ ही यह आलेख कोविड–19 के संभावित चुनौतियों एवं सामाधान की भी व्याख्या करता हैं।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

राजेश तिवारी व जयप्रकाश जायसवाल(जनवरी 2020)

रोजगार पर कोविड–19 के प्रभाव में कोरोना वाइरस के संपूर्ण विश्व के सामने आजीविका पर संकट उत्पन्न हो गया है। कोविड–19 के कारण हुए लॉकडाउन से दिहाड़ी मजदूरों, निजी व असंगठित क्षेत्र में काम करने वालों के काम बंद होने से लोगों की मांग बहुत ही कम हो गयी हैं लोग शहर से गांवों की ओर पलायन कर रहे हैं। पलायन के कारण उद्योंगों में कामगारों की कमी हो गयी हैं। कोविड–19 का सेवा क्षेत्र, पर्यटन क्षेत्र व अन्य क्षेत्रों पर बहुत ही गंभीर असर पड़ा है।

डॉ0 विमल कुमारी लहरी (जून 2020)

कोरोना वाइरस चुनौतियाँ एवं सामाधानः कोविड–19 का संक्रमण पूरी दुनियां में पड़ा हैं। मानव जीवन के सभी पहलुओं पर कोविड–19 का बुरा प्रभाव पड़ा है। जहाँ एक ओर सामाजिक संबंधों के मायने बदल दिए तो वहीं दूसरी ओर ऐसी आपदा ने लोगों को जानने व समझने में जागरूकता भी बढ़ी हैं। सभी पक्षों को चूनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैं। इस चुनौतियों से बाहर निकलने के लिए सरकार के साथ–साथ आम लोगों को भी इसका रास्ता निकलना होगा। कोविड–19 के प्रभावों से बाहर निकलने के लिए धर्म, कर्तव्य, एवं समाज सेवा के समन्वित रूप को लोगों के बीच रखना चाहिए। प्रभावित लोगों को समर्थ लोगों द्वारा सहायता देनी चाहिए। यही मानव धर्म है।

हरि राम मीना (अप्रैल 2020)

कोविड–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभावः कोरोना वाइरस के कारण हुए लॉकडाउन का असर अधिकतर सेक्टर पर पड़ा है। उद्योग बंद है, कारोबार ठप है, कारोबारी घर पर बैठे हैं। मंदी के साथ बेरोजगारी बढ़ने का खतरा मंडरा रहा हैं। कोरोना महामारी के चलते वैश्विक मंदी की आशंका व्यक्त की जा रही है। दुनिया को आर्थिक संकटों से जूझना पड़ सकता है।

पल्लवी शर्मा (जून 2020)

Covid-19 pandamic outbreak-the impact on the agricultural sectors in india कोविड–19 भारत के लिए एक अभूतपूर्व चुनौती है। कृषि व अन्न भी कोविड–19 के प्रभावों से अलग नहीं है। फसल, पशुधन, मछली पालन, मुर्गीपालन आदि इस आपदा से बुरी तरह से प्रभावित हुई है। वर्तमान परिदृश्य में खाद्य सुरक्षा एक चिंता का विषय है। पूर्ति श्रृंखला कोविड–19 के कारण बुरी तरह प्रभावित होने के कारण एक प्रमुख मुद्दा है। अतः राज्य व केंद्र सरकार दोनों मिलकर खाद्य श्रृंखला को बिना प्रभावित किए इस आपदा से निपटने के उपाय करने चाहिए और अपने नागरिकों के लिए खाद्य सुरक्षा पर विचार करना चाहिए।

तुसार व अन्य (जून 2020)

Covid-19 Era: Farmer's openion about the Impact of Lockdown on Agricultural sectors कोविड–19 का कृषि क्षेत्र पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा है। लॉकडाउन के कारण किसानों को वित्तीय हानि हुई है। ऐसी स्थिति में किसानों को उसके परिवार का भरण–पोषण करने में कठिनाई उत्पन्न कर दी है। हलांकि कुछ किसानों को समय–समय पर सरकारी सहायता मिली है। यद्यपि कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि को सरकार ने कम महत्व प्रदान किया है। यदि इस आपातकाल में कृषि क्षेत्र में सुधार करना हो तो मुख्य रूप से किसानों को उसकी फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य व अनुदान उपलब्ध कराना चाहिए।

शोध उद्देश्य (Objecties of Research)

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य कोविड–19 के कृषि क्षेत्र पर प्रभाव का विश्लेषण करना तथा कोविड–19 का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। भारतीय कृषि की मौजूदा स्थिति व उससे संबंधित चुनौतियों पर विचार किया जाएगा। वहीं मंदी के प्रभाव को कम करनेवाले संभावित विकल्पों का भी अध्ययन किया जाएगा।

शोध विधि(Research Methodology)

यह शोध पत्र विश्लेषणात्मक व द्वितीयक स्त्रोत पर जो विभिन्न सामाचार पत्र–पत्रिकाओं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए शोध आलेख पर आधारित हैं। साथ ही विभिन्न दैनिक सानाचार पत्र में प्रकाशित आलेख पर भी आधारित है।

विवेचन एवं प्रतिफल(Discussion and Result)

भारत की कुल आबादी का लगभग 68 प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है। इसका अर्थ है कि संपूर्ण भारतवर्ष का सबसे बड़ा उपभोक्ता वर्ग ग्रामीण आबादी ही है। लॉकडाउन के कारण प्रवासी मजदूर अपने गांवों को लौट आया है। अतः लगभग तीन–चौथाई आबादी वर्तमान समय में गांवों में है। औद्योगिक इकाइयों के बंद होने, बिक्री कम होने से, कर्मचारियों की छंटनी की गई, दिहाड़ी मजदूरों का अपने गांवों को लौटने से, वैश्विक व्यापार के लगभग नगण्य होने आदि कारणों से औद्योगिक उत्पादन काफी कम हो गया। अतः इन सब कारणों से बेरोजगारी का बढ़ना, कम निवेश होना, सीमित आय होना आदि परिणाम हुए। लोगों की आय कम होने या सीमित होने से लोंगों की क्रय शक्ति कम हो गयी फलस्वरूप वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग कम हो गयी। लोग कम बचत कर रहें हैं। इन सभी कारणों से सकल मांग व सकल उपभोग कम हो गया है।

भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति

वर्तमान में आर्थिक सर्वेक्षण 2019–20 के अनुसार जो मौजूदा स्थिति है कि भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अन्य श्रोतों की तुलना में रोजगार के लिए कृषि पर अधिक निर्भर हैं। कोविड–19 की वजह से हुए लॉकडाउन से प्रवासी मजदूरों की घर वापसी से कृषि पर निर्भरता और अधिक बढ़ गयी हैं। वहीं कृषि उत्पादों के वैश्विक व्यापार में भारत एक अग्रणी राज्य है। फिर भी वैश्विक कृषि व्यापार में योगदान मात्र 2.15 प्रतिशत है। हमारा कृषि व्यापार अधिकतर अमेरिका, ईरान, सऊदी अरब, बंग्लादेश व नेपाल आदि देशों से अधिक है। देश के लाखों ग्रामीण परिवारों को पशुधन से बड़ी नकद आय प्राप्त होती है। किसानों की आय को बढ़ाने में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विगत पाँच वर्षों के दौरान पशुधन क्षेत्र में 7.9 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। वहीं कृषि सहायक क्षेत्रों का हिस्सा 2014-15 में 18.2 प्रतिशत था जो वर्ष 2019-20 में 16.5 प्रतिशत हो गया हैं फिर भी वर्ष 1991 के आर्थिक सुधार से आज तक भारत कृषि उत्पादों के निर्यात को बनाए हुए है। भारत में विश्व की 10वीं सबसे बड़ी कृषि भूमि है। वहीं 15 प्रमुख जलवायु व 20 कृषि जलवायु क्षेत्र है। 2001 ई0 में भारत में कुल कृषकों की संख्या 12.73 करोड़ थी जो घटकर 2020 ई0 में 11.88 करोड़ रह गयी है। किसानों लागातार घटती संख्या चिंता का विषय है।

भारतीय कृषि पर कोविड–19 के प्रभाव (Impact of covid-19 on Agriculture)

1. **भण्डारण व विपणन पर प्रभाव**

कोरोना वाइरस के कारण हुए लॉकडाउन का प्रभाव किसानों पर बुरी तरह से पड़ा है। खेती किसानी के सभी कार्य प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए हैं। किसान तथा कृषि आधारित अन्य गतिविधियों में लगे लोगों पर गंभीर संकट खड़ा हो गया है। एक तरफ रबी की फसल जैसे–गेहूँ, चना, सरसों, अरहर, मसूर, मक्का की फसल तो किसी तरह से जैसे–तैसे घर पहुँच गया लेकिन कोरोना वाइरस के कारण हुए लॉकडउन से हुए प्राकृतिक परिवर्तनों से किसान फसल को ठीक ढंग से तैयार नहीं कर पा रहें हैं। वहीं आलू, प्याज, लहसुन, आदि के भण्डारण की समस्या आ रही है। सब्जी किसानों पर दोहरी मार पड़ी है। बाजार में बाहरी व्यापारियों का आना बंद है। होटल, रेस्टोरेंट बंद है, वहीं शादी–विवाह जैसे बड़े आयोजन नहीं हो रहे हैं जिसके कारण शब्जियों की मांग केवल स्थानीय ही रह गयी है वह भी औने–पौने दामों में। बाकीं बची सब्जियों को किसान फेकनें को मजबूर हो रहें है क्योंकि बाजार तक पहुंचने की लागत तक भी प्राप्त नहीं हो पा रही है। कच्चे प्रयोग में आनेवाली सब्जियां जैसे–खीरा, ककड़ी, कददू, भिंड़ी, नेनुआ, टमाटर, शाक, धनियां पत्ता, गाजर, प्याज, करेला, परवल, तरबूज, बोड़ा को लोग कोरोना संक्रमित होने के भय से खरीदने से बच रहें हैं। चूंकि इनकी बुवाई जनवरी के महीने में ही हो गयी थी अभी इसका तेजी से उत्पादन हो रहा है। इन फसलों को तैयार करने में किसानों की सारी पूंजी लग चुकी है। खेत की जुताई से लेकर खाद, बीज, रसायन व सिंचाई में निवेश के बाद भी छोटे उत्पादकों के समक्ष संकट उत्पन्न हो गया है।

2. **पशुपालन पर प्रभाव**

लॉकडाउन के कारण कृषि सहायक उद्योंगों जैसे– पशुपालन, मुर्गीपालन, मछली पालन आदि में लगे लोगों की हालत भी दयनीय है। चूंकि शादी–विवाह में मांस, मछली, मुर्गा या कुक्कुट की मांग बढ़ जाती है। इस कारण पोल्ट्री फॉर्म वालों ने बड़े पैमाने पर इसमें निवेश कर रखा था। वहीं नवरात्रि के बाद भी मांस, मछली, अंड़ा, मुर्गी की मांग काफी बढ़ जाती है। इस बात को ध्यान में रखकर भी इसके उत्पादकों ने बड़े पैमाने पर निवेश कर रखा था लेकिन उत्पादन व बिक्री के स्तर पर पहुँचने से पहले ही लॉकडाउन होने से इन लोगों का बाजार चौपट हो गया। साथ ही उपभोक्ता मांस, मछली, अंड़ा, चिकन, व अन्य मांसाहारी उत्पाद कोरोना संक्रमण के भय से नहीं खरीद रहे हैं जिसके चलते दामों में भारी गिरावट आयी और इनकी बड़ी पूंजी फँस गयी ।

वहीं पशुपालकों की स्थिति काफी दयनीय है क्योंकि किसानों की आय का एक बड़ा साधन पशु दुग्ध से प्राप्त आय होती है। मिठाई दुकानों, होटल आदि में होनेवाली दूध, खोया, पनीर, छेना, रसगुल्ला आदि की खपत लगभग नहीं हो रही है। इस कारण दूध की खपत काफी कम हो जाने से, डेयरी वालों ने भी कम दूध खरीद रहे हैं। गर्मी के दिनों में दुध की मांग काफी बढ़ जाती है क्योंकि इस समय में शादियों का मुहुर्त होता है जिससे दूध, दही, घी, मिठाई आदि की मांग काफी बढ़ जाती है लेकिन लॉकडाउन होने से ये सारे आयोजन बंद पड़े हैं। फलतः दूध उत्पादकों को दूध कम कीमत पर बेचने को मजबूर हो गये हैं उसमें भी सारी दूध नहीं बिक रही है। ऐसी दशा में दूध की उत्पादन लागत भी प्राप्त नहीं हो पा रही है। वहीं दूसरी तरफ आवागमन बंद होने, पेट्रोल एवं डीजल के दामों के बढ़ने से पशुओं का चारा, खल्ली, आदि के मुल्यों में भी बढ़ोत्तरी होने से इनका उत्पादन लागत बढ़ रहा है। मूल्य नियंत्रण के सरकारी प्रयासों के बावजूद जमीनी स्तर पर इसका कोई प्रभाव नहीं दिख रहा है।

3. **बंटाई व भूमिहीन किसानों पर प्रभाव**

जो किसान भूमिहीन हैं या अंधिया बटाई पर खेती करते हैं उनके सामने एक गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है क्योंकि पूरी पूंजी लगाने के बाद भी उनका हाथ पूरी तरह खाली है। ऐसे किसान अन्य लोंगों की भूमि पर अपनी पूँजी लगाकर खेती करते हैं और उपज होने पर आधी उपज भूमि के मालिक को दे दिया जाता है। ऐसे मे ऐसे किसानों की सारी पूँजी तो डुब ही गयी। ऐसे किसानों को अपनी कोई भूमि नहीं होने के कारण एकमात्र सहारा कृषि उपज ही है जिससे किसी तरह से अपने परिवार का भरण–पोषण किया करते है। उसपर भी बाढ़, सुखाढ़ या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा के समय भी इनकी स्थिति काफी दयनीय हो जाती है। एक तो पहले से इनकी आर्थिक स्थिति काफी खराब है ऊपर से कोरोना महामारी ने इनकी तो स्थिति और अधिक दयनीय बना दिया है। अगर कोई सरकारी सहायता भविष्य में या हाल के दिनों में आती भी है तो उसका लाभ भूस्वामी को मिलेगा, उस भूमि पर वास्तविक खेती करने वालों को नहीं। ऐसी स्थिति में इनके कर्ज में डूबने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है। इनके परिवार का भरण–पोषण, बेटी की शादी–विवाह, बच्चों की पढ़ाई की समस्या के साथ–साथ इनके सामने भूखमरी की नौबत आ सकती है।

4. **जायद व खरीफ फसल की बुवाई पर प्रभाव**

एक ओर रबी की फसल के किसानों को उसकी लागत भी प्राप्त नहीं हो पा रही है तो दूसरी तरफ जायद फसल की बुवाई के लिए बीज, खाद, रसायन भी नहीं मिल रहे हैं। हालांकि सरकार ने खाद व बीज की दुकानों को खोलने के आदेश दिए हैं लेकिन ग्रामीण किसानों की शहर तक पहुंच नहीं होने व दुकानदारों तक सभी वस्तुओं का स्टॉक नहीं होने व उद्योगों में उत्पादन बंद होने से जिसके पास कुछ माल पूर्व से बचा है वो अधिक कीमत ले रहे हैं। एक ओर तो किसानों के उत्पाद की कम कीमत व कर्ज ने बेहाल कर रखा है। किसानों के पास पूँजी का आभाव है तो वहीं दूसरी ओर जायद व खरीफ की फसल लगाने में अधिक निवेश करना पड़ रहा है। मजदूर भी कोरोना संक्रमण के कारण खेतों में जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं।

5. **कृषि पर बढ़ता जनसंख्या दबाव**

भारतीय अर्थव्यवस्था के परिदृश्य में 68 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि पर ही निर्भर हैं बांकी आबादी द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों पर निर्भर हैं। भारत में असंगठित क्षेत्र में 86 प्रतिशत लोग काम करते हैं। लोगों

के शहरों में छोटा–मोटा व्यवसाय करनेवाले श्रमिकों, फैक्ट्रियों में काम करने वाले कर्मचारियों, दिहाड़ी मजदूरों आदि के काम बंद है। लोगों की आमदनी घटने ,काम बंद होने ,नौकरी जाने, या मजदूरी का काम नहीं होने के कारण ये लोग शहरों से अपने गांव की ओर पलायन कर रहें हैं। गांवों की ओर पलायन का यह भयावह दृश्य वर्तमान युवा पीढ़ी ने कभी नहीं देखा है। इन लोगों के गांव की ओर पलायन करने से अपनी आजीविका कृषि क्षेत्र में ही निर्भर होंगे। फलतःकृषि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ेगा। श्रमिकों की सीमांत उत्पादकता कम हो जायेगी। वही उद्योगों में श्रमिकों की कमी होने से वस्तुओं का उत्पादन कम हो जायेगा जिसके कारण मुद्रास्फीति बढ़ने की संभावना हैं। वर्तमान परिदृश्य में यह तो स्पष्ट है कि कृषि के साथ–साथ शहरी जीवन, उद्योगों का अस्तित्व ग्रामीण आबादी पर ही टिका हुआ है।

6. फूल उत्पादकों पर प्रभाव

फूल उत्पादकों पर कोरोना का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। फूल उत्पादकों ने सोचा था कि इस साल अच्छी फसल होगी जिससे वे अपना घर बनाने तो किसी ने बेटी की शादी करने तो किसी ने पुराना कर्जा चुकाने की सोच रखी थी। इस साल में किसानों की फूल की उपज भी काफी अच्छी थी लेकिन कोरोना महामारी के समय लॉकडाउन ने किसानों और फूल से जुड़े कारोबारियों के अरमानों पर पानी फेर दिया। कारोबारियों के समक्ष अपनी आजीविका को चलाना मुश्किल हो गया है। फूलों का व्यवसाय पूरी तरह चौपट हो गया है। अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि अप्रैल से लेकर जून तक इन तीन महीनों में देश भर में करीब 5000 करोड़ रूपये से अधिक का नुकसान हुआ। कोरोना महामारी के चलते मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरजाघर सहित अन्य धार्मिक स्थल बंद है। शादी समारोहो, मांगलिक कार्यों, गृहप्रवेश आदि का आयोजन नहीं हो रहा है। सभी धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर रोक हैं। इसका सीधा प्रभाव फूलों के व्यापार पर पड़ा है।

7. चाय उत्पादकों पर प्रभाव

दुनियाभर में फैले कोरोना वाइरस की वजह से भारतीय चाय की कीमत में भारी गिरावट आयी है। भारत चाय का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। ईरान, चीन, जर्मनी, जापान भारतीय चाय का सबसे बड़ा खरीददार है। इन देशों ने चाय के आयात को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया हैं। जहाँ पहले चाय 200 रूपये किलो बिकती थी वहीं कोरोना के कारण अब 100–110 रूपये किलों बिक रही है। भारत के पास पिछले साल का 5 करोड़ किलो चाय का स्टॉक पडा हुआ है। वहीं इस साल की चाय की उपज को कहाँ खपाएगा यह सबसे बड़ी समस्या है। चाय उद्योग में लगभग 30 लाख लोगों को रोजगार मिलता है। वहीं वर्ष 2019 में चाय उद्योग का कुल विदेशी व्यापार 3740 करोड़ रूपये था। चाय उद्योग पहले से ही कठिनाइयों से जूझ रहा है और कोरोना की मार से चाय बगान मालिकों के सामने और मुश्किलें खड़ी हो गयी है।

8. फल उत्पादकों पर कोरोना का प्रभाव

कोरोना वाइरस के भय से फलों का व्यवसाय पर प्रतिकूल असर पड़ा है। शादी विवाह, जन्मदिन, सालगिरह, पूजा–पाठ आदि के नही होने व फलों के विदेशी व्यापार के बंद होने से फलों के उत्पादकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है क्योंकि इस महामारी में हवाई उड़ानें बंद है। वहीं सलाना फल जैसे–आम, लीची, कटहल, तरबूज, आदि के उत्पादन व बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। एक ओर तो कोविड–19 के कारण हुए प्राकृतिक परिवर्तनों ने इन फसलों को शुरूआती नुकसान पहुँचाया है। जब फल पकने का समय आया तो फलों में अंधिया बीमारी ने किसानों को तबाह कर दिया है। तत्पश्चात् फलों की मांग में कमी होने से काफी सस्ते दामों में फलों को बेचने को मजबूर हैं। लोग कोरोना महामारी के फैलने के भय से केला, अन्ननास, सेब, अनार अंगूर, लीची संतरा, आदि फलों को खरीदना नहीं चाह रहे हैं। फलस्वरूप फलों की मांग में कमी होने से कम कीमत पर फलों को बेचने को मजबूर हैं उसपर भी सारी फलें बिक नहीं रही हैं। अतः फल उत्पादकों की सारी पूँजी डूबने की आशंका है।

कोविड–19 की कृषि क्षेत्र में चुनौतियाँ

भारत सरकार की रणनीति मूख्यतः कृषि उत्पादन बढाने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चिंत करने तक ही सीमित रही है परंतु किसानों की आय बढ़ाने का ठोस पहल नहीं हो सका है। भारत हरित क्रांति के अपनाने से खाद्य उत्पादन लगभग 4 गुनी बढ़ी हैं वहीं जनसंख्या में लगभग 2.6 गुनी की वृद्धि हुई है लेकिन किसानों की आय वृद्धि ना काफी है। कृषि क्षेत्र पर लागातार जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है। वहीं कृषि भूमि का रूपांतरण वैकल्पिक उपयोगों के लिए बढ़ रही है। फलतः कृषि क्षेत्र के औसत भूमि धारण क्षमता कम हो रही है। 1970-71 में 2.28 हेक्टेयर, 1980-81 में 1.82 हेक्टेयर, 1995-96 में 1.50 हेक्टेयर तथा 2012-13 में 1.4 हेक्टेयर हो गया। वहीं अच्छी पैदावार के लिए अच्छी किस्म की बीज, खाद, कीटनाशक आदि की उपलब्धता का होना भी अति आवश्यक है परंतु दुर्भाग्यवश अधिकतर किसानों को ये साधन आसानी से उपलब्ध नहीं होते हैं। आजादी के 7 दशकों के बाद भी किसान अपने उपज की सही कीमत नहीं मिल पाता है। विपणन की व्यवस्था के आभाव में किसान अधिक उपज होने पर फसल की कीमत इतनी कम हो जाती है कि वे इसे या तो स्थानीय व्यापारियों को औने–पौने दामों में बेचने को विवश हो जाते हैं या फिर उसे फेकने को मजबूर हो जाते हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में विपणन की समस्या काफी गंभीर है। इस कोरोना महामारी के कारण कृषि संबंधी गतिविधियाँ पूर्णतः ठप्प है। किसानों की पूँजी उसकी पूर्ववर्ती फसल से नहीं निकल पा रही है। किसान अपनी पिछली फसल को बेचकर उससे होनेवाली आर्थिक आय से अगली फसल को खेतों में लगाते हैं। इसलिए किसान रबी फसल की सही कीमत न मिलने और रबी फसलों में जल्दी सड़ने–गलने वाली फसलों और किसानों को नकद आमदनी का सबसे अच्छा साधन शब्जियों व दूध में हुई हानि से किसान संकटग्रस्त हो गये हैं। अब वह खरीफ की फसल को लगाने में हिचक रहे हैं। शहरों से गांवों की ओर लोगों की बड़ी संख्या में पलायन होने से कृषि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है।

जहाँ एक ओर किसान पहले से ही त्रस्त हैं वहीं भविष्य में भी चुनौतियाँ बड़ी हैं। किसानों की पूँजी की कमी को दूर करना, किसानों को उसके उत्पाद की सही कीमत, कोरोना से हुई नुकसान की भरपाई करना काफी मुश्किल काम होगा। पलायन के फलस्वरूप कृषि पर बढ़ते दबाव को कम करने की चुनौतियों से भी निपटना होगा तथा कृषि उत्पाद के विपणन की भी व्यवस्था करनी होगी। वहीं दूसरी ओर अगर कोरोना का प्रकोप गांवों की ओर होती है तो स्थिति बड़ी भयावह हो सकती है।

अवसर व सुझाव

देश की आबादी का लगभग 55 प्रतिशत हिस्सा कृषि व संबंधित उद्योगों से अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं। साथ ही किसानों की आय का एक बड़ा हिस्सा पशुपालन व संबंधित उत्पादों से है। अतः उन कृषि उत्पादों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिन्हें हम अन्य देशों को निर्यात कर सकते हैं। कृषि उद्योगों के संचालन को बढ़ावा देकर सरकार कृषि क्षेत्र में उन्नति के साथ–साथ लोगों को रोजगार में भी वृद्धि होगी। इससे किसानों को लिए विपणन हेतु बाजार भी उपलब्ध हो जाएगा। कृषि उद्योग एक सर्वव्यापी अवधारणा है जिसमें विभिन्न औद्योगिक प्रसंस्करण और विनिर्माण गतिविधियों का समावेश कृषि पर आधारित कच्चे माल पर होता है। इस गतिविधियों में सेवाओं का भी समावेश होता है। इन गतिविधियों में सेवाओं को भी शामिल किया जाता है जो इनपुट के रूप में कृषि से प्राप्त होते हैं। कृषि एवं उद्योग किसी भी प्रकार भी विकासशील राष्ट्र की विकास की प्रक्रिया में एक–दूसरे के पूरक हैं। कृषि उद्योग न केवल कृषि से कच्चेमाल की प्राप्ति करती है बल्कि आधुनिक कृषि व्यवसाय के लिए इनपुट भी प्रदान करता है। अतः भारत में दो प्रकार के कृषि आधारित उद्योग हो सकते हैं – (क) कृषि उद्योग जिसमें जमींन एवं पेंड़–पौधे, फल एवं शब्जियाँ, गुड़ एवं चीनी उद्योग एवं उसके दिन–प्रतिदिन के कार्यों में उपयोगी पशुधन शामिल है। वहीं (ख) कृषि आधारित उद्योंगों में खाद्य एवं पेय, कपड़ा, जूते और परिधान, चमड़ा, रबर, लकड़ी, तंबाकू उत्पाद के विनिर्माण व प्रसंस्करण आदि उद्योंगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यदि भविष्य में कोरोना महामारी जैसी विपत्ति आएगी भी तो भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर नहीं होगा क्योंकि कृषि आधारित उद्योंगों की स्थापना से कृषि प्रधान राज्यों में उद्योगों का जाल बिछेगा जहाँ भीड़–भाड़ कम होगी। वहीं कृषि के समावेशी विकास हेतु कृषि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर सरकारी व निजी निवेश की आवश्यकता है जो अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन प्रदान करेगी। वहीं किसानों को मिलनेवाली आर्थिक सहायता राशि कृषि सम्मान निधि योजना और इस प्रकार की योजनाओं से मिलनेवाली सहायता राशि अधिक होनी चाहिए तथा समय पर किसानो को सहायता राशि मिल जानी चाहिए ताकि किसान खरीफ फसल को लगाने में हतोत्साहित नहीं हो। वहीं कृषि पर जनसंख्या का रोजगार के लिए अधिक दबाव नहीं हो इसके लिए मनरेगा जैसी और भी अधिक योजनाएं चलायी जानी चाहिए। मनरेगा योजनाओं में और अधिक विस्तार करने की आवश्यकता है क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था को यदि मंदी की मार से बाहर निकलना है तो असंगठित क्षेत्र के अकुशल श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध कराना अति आवश्यक हैं। ऐसा करने से एक ओर तो शहरी पलायन रूकेगा। वहीं दूसरी ओर लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि होने से वस्तुओं की मांग बढ़ेगी जिसका गतिशील प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर होगी जिससे अन्य उद्योंगों को भी गति प्रदान करेगी। प्रत्येक देश अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए प्रयासरत हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को मंदी से मुकाबला करने के लिए कृषि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश करने के साथ–साथ इसके आधुनिकीकरण की आवश्यकता हैं।

कृषि अर्थव्यवस्था के विकास के लिए यही सही अवसर है क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था में मौजूदा समय में मूल्यों में कमी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश किया जाना अति आवश्यक है जिससे उपयुक्त बुनियादी ढाँचा का विकास कर ग्रामीण व उसके आस–पास के क्षेत्रों में आधुनिक कृषि आधारित उद्योंगों की स्थापना की जा सके।

कोरोना वाइरस के प्रकोप के कारण जहाँ एक ओर शहरों से श्रमिकों का पलायन हो रहा है। इसे रोकने के लिए तत्काल सभी उद्योंगों को चालू करने की आवश्यता है क्योंकि ऐसा नहीं करने से भविष्य में या कोरोना संकट के उपरांत श्रमिकों की कमी का सामना करना होगा। अतः सभी कामगारों को उसके कारखाने में ही स्क्रीनिंग करके तत्काल काम पर लगाया जाना चाहिए। ऐसा करने से कृषि क्षेत्र पर अनावश्यक जनसंख्या का दबाव नहीं बढेगा। वहीं दूसरी ओर लोगों का पलायन भी रूकेगा। यहाँ सामाजिक दूरी का ख्याल रखना अति आवश्यक होना चाहिए। वहीं मास्क लगाने के साथ–साथ अन्य सुरक्षात्मक उपाय भी जरूरी होने आवश्यक होने चाहिए। देश के लगभग 6 लाख गांवों में कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने पर सरकार को अपना ध्यान क्रेंद्रित करना चाहिए। उद्योगों का एक ही जगह केंद्रीयकरण न होकर देश के कोने–कोने में उद्योगों का जाल बिछाना आवश्यक है ताकि एक ही शहर में भीड़ कम हो और भविष्य में ऐसी चुनौतियों से निबटने में आसानी हो। अतः प्रत्येक देश अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए प्रयासरत हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को मंदी से मुकाबला करने के लिए कृषि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश करने के साथ–साथ इसके आधुनिकीकरण की आवश्यकता हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

कोरोना महामारी एक ऐसी वैश्विक महामारी है जिसने विश्व की अर्थव्यवस्था को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। यह महामारी चीन के वुहान शहर से निकलकर विश्व के देशों में फैला ने सूक्ष्म से लेकर वृहत उद्योंगों, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा सहित, कृषि क्षेत्रों पर काफी प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया हैं। व्यापारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, व आर्थिक सभी प्रकार की गतिविधियों को ठप्प करके रखा है। भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। फसलों की तैयारी व भंडारण में देरी, फसलों की मांग व कीमतों में भारी गिरावट, फसलों की बुवाई होने में कठिनाइयाँ आदि के कारण किसानों की हालत काफी दयनीय स्थिति में है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-11* July- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सीमांत किसान हो या बड़े किसान सभी की हालत काफी दयनीय है। अतः सरकार कृषि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश करना चाहिए तथा साथ ही साथ कृषि आधारित उद्योग व कृषि उद्योंगों की स्थापना करनी चाहिए। किसानों व उससे जुड़े उद्योगों को तत्काल बड़े पैमाने पर वित्तीय सहायता की आवश्यकता हैं। कृषि पर से जनसंख्या का दवाब कम करने के लिए मनरेगा जैसी योजनाओं का तेजी से विस्तार की जानी चाहिए तभी हम भारतीय अर्थव्यवस्था को कोरोना महामारी से उत्पन्न मंदी की साया से बाहर निकालने में सफल हो सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. *Agricultural Land by use in India, Agricultural Statistics at a Glance*
2. *Agriculture Census 2010-11*
3. *siche R. (2020) what is the impact of COVID-19 disease on agriculture? scientia agropecuaria 11(10), 3-6*
4. *Rani j(2020). the effect of corona virus on bussiness in india. Tathapi journal ISSN:2320-0693*
5. *Mukhopadhyaya, B.R (2020). COVID-19 and Indian farm sector: ensuring everyone's seat at the table Agriculture and human value.*
6. *Manjhi, N(2020). the sociology of Covid-19 pandamic. Tathapi journal ISSN:2320-0693, 19(4), 210-216.*
7. *Leelawathi, R(2020). Economic Impact of Corona Virus Pandamic in india Tathapi journal ISSN:2320-0693, 19(20), 88-102*
8. *Tushar D. Bagul and Vikram R. Jadhav(2020) COVID-19 Era: Farmer's Openion about the Impact of Lockdown on An Agriculture Sector? Tathapi journal ISSN:2320-0693 19(40), 222-227*
9. *DR. B. UMA et. all(2020): iMPACT OF covid-19 on the Lockdown Generation: A Study Beyond Economic and Commerce. Tathapi journal ISSN:2320-0693 19(43), 55-64.*
10. *Mr. Vishnu Govindan and Dr. Suleena(2020):Implication of COVID-19 on Agriculture sector. Tathapi journal ISSN:2320-0693, 19(45), 58-64.*
11. *www.shodhganga.gov.in*
12. *www. researchgate.com*
13. *www.wikipedia.com*
14. *www.hindubusinessline.com*
15. *www.epaperhindustan.com*
16. *www.epaperdainikjagran.com*
17. *www.WHO.org*
18. *www.icmr.gov.in*
19. *www.epaperprabhatkhabar.com*
20. *www.dainikbhaskar.com*